International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 7, Issue 08, August 2020
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

1857 की क्रांति एवं भारत में राष्ट्रीय चेतना का उदय :– एक अवलोकन

युगेश कुमार
एम. ए. , नेट (इतिहास)
e-mail : vijaybharat2011y@gmail.com

भूमिका

1857 की क्रांति भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का आधार किस हद तक मानी जा सकती है। यह एक विचारणीय एवं अवलोकन किये जाने योग्य है। 1857 की क्रांति की शुरूआत सिपाहियों द्वारा जो की गई, और जिसका प्रस्फुटन 10 मई, 1857 को मेरठ से होता हुआ कानपुर, बरेली, झांसी, दिल्ली अवध आदि स्थानों पर फैल गया। उसका स्वरूप कालान्तर में बदल कर ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध एक जनव्यापी विद्रोह के रूप में हो गया। इस तरह 1857 की क्रांति को भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम भी कहा जाता है यह ठीक है कि कुछ कारणों से यह विद्रोह असफल रहा , पर विद्रोह को दबानें के लिये ब्रिटिश उपनिवेशवादी शासन ने जिस अभानुषिक दमन से काम किया, उससे भारतीय जनता में असंतोष बढ़ा। जो आगे चलकर भारतीय राष्ट्रवाद के उदय का कारण बना।

अंग्रेजी शासन को भारतीय राष्ट्रीयता का पोषक या जनक कभी भी नहीं कहा जा सकता है। वास्तविकता तो यह है कि अंग्रेजों ने भारतीय राष्ट्रीयता को कभी स्वीकार ही नहीं किया। किन परिस्थितियों तथा किन कारणों से भारत में राष्ट्रीय चेतना का उदय हुआ। उसका विवेचन निम्न शीर्षकों के अधीन किया जा सकता है :–

(1) भारत का वैभवपूर्ण अतीत :– भारत का अतीत व उसका वैभवता ने भारतीयों को पुनः राष्ट्रीयता के पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा दिया। भारत का अतीत अत्यन्त वैभवपूर्ण रहा है। जब–जब अवनति की ओर समाज गया है। उसके अतीत ने सदा भारतीयों को उस बात के लिये प्रेरित किया है कि वे उन्हें पुनः ऊँचा उठाये। यही कारण था कि अंग्रेज भारतवर्ष को केवल राजनीतिक रूप से ही परतंत्र बनाये रख सके। भारत के वैभवपूर्ण अतीत में पली हुई उसकी आत्मा ने परतंत्रता को कभी भी स्वीकार नहीं किया। भारत की आत्मा ने सदा परतंत्रता की बेड़ियों को तोड़ फेकने के लिये प्रयत्नशील बनी रही।

(2) धार्मिक व सामाजिक पुनर्जागरण :– भारतीय जीवन के प्रत्येक पहलू सदा से अविच्छिन्न रूप से धर्म से सम्बद्ध रहा है तथा उन्नीसवीं शताब्दी के धार्मिक व सामाजिक पुनर्जागरण ने भी भारतीय राष्ट्रीय चेतना के उदय में बड़ा महत्वपूर्ण योग दिया है। डॉक्टर 'जकारिया' ने अपनी पुस्तक 'रिनेसेन्ट इण्डिया' (Renaissant India) में लिखा है– ''भारत की पूनर्जाग्रति मुख्यतः आध्यात्मिक थी तथा एक राष्ट्रीय आन्दोलन का रूप धारण करने से पूर्व इसने अनेक सामाजिक व धार्मिक आन्दोलनों का सूत्रपात किया था''।

उन्नीसवीं शताब्दी के उन सुधार आन्दोलनों में जो भारतीयों में राष्ट्रवादी भावना को उदित करने में सहायक हुए उनमें ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन तथा

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

थियोसोफिकल सोसाइटी के नाम विशेष उल्लेखनीय है। समष्टि रूप से उक्त आन्दोलनों द्वारा धार्मिक व समाजिक सुधारों के माध्यम से एक ऐसी क्रांति का सूत्रपात किया गया, जिसके फलस्वरूप भारतीयों का धर्म के प्रति अन्धविश्वास समाप्त हुआ तथा वे धार्मिक रूढ़ियों को त्यागकर समय व देशहित में धर्म का पालन करने लगे। धार्मिक क्रांति के कारण शिक्षा प्रसार, स्त्रियों की हीन–दीन दशा में सुधार, बाल–विवाह पर रोक तथा विधवा–विवाह के प्रचार–प्रसार में वृद्धि ने सामाजिक स्तर को ऊँचा उठाया। अतः इस प्रकार के सामाजिक एवं धार्मिक पुनरूद्धार द्वारा धर्म का सम्बन्ध देश हित से स्थापित हुआ और उससे राष्ट्रीय चेतना के उदय में महत्वपूर्ण योगदान मिला।

(3) राजनीतिक एकता की स्थापना :– भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना के पहले सम्पूर्ण भारत विविध राजनीतिक इकाइयों में बँटा हुआ था। परन्तु ब्रिटिश शासन की स्थापना ने भारत को राजनीतिक रूप से एक इकाई बना दिया। ऐसा होने से देश के विभिन्न भागों के लोगों में पारस्परिक सम्पर्क स्थापित हुआ तथा एक राजनीतिक इकाई की जनता होने के नाते उनमें राष्ट्रीय एकता की भावना जाग्रत हुई। 'पुन्निया' के शब्दों में–ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत ''हिमालय से कन्याकुमारी अन्तरीप तक सम्पूर्ण भारत एक सरकार के अधीन आ गया और इससे जनता में राजनीतिक एकता की भावना की उत्पति हुई।''

इस सम्बन्ध में यह स्मरणीय है कि ब्रिटिश शासन द्वारा सम्पूर्ण भारत को एक शासन के अधीन लाने का उद्देश्य उसे केवल प्रशासनिक दृष्टि से एक बनाना था। पर इस प्रशासनिक व राजनीतिक एकता ने भारतीयों में एक ऐसी विचार–प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी, जिसका अन्तर्राष्ट्रीय चेतना के उदय के रूप में हुआ। एक ही केन्द्र द्वारा भारतीयों द्वारा किया गया विरोध भी एक–सा ही रहा। जैसाकि पं. नेहरू ने कहा है–''ब्रिटिश शासन द्वारा स्थापित भारत की राजनीतिक एकता सामान्य एकता से कहीं अधिक थी''।

(4) आन्तरिक शान्ति व व्यवस्था :– उन बातों मे से जो भारत में अंग्रेजी उपनिवेश की स्थापना के करण आई। परन्तु जो भारत में राष्ट्रीयता की भावना के प्रोत्साहन में सहायक हुई, आन्तरिक शान्ति व व्यवस्था सबसे अधिक महत्व की थी। ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना से पहले भारत में छोटे–छोटे अनेक राजाओं व नबावों के शासन के अस्तित्व के कारण आपसी भेदभाव, फूट व अशांन्ति का वातावरण रहता था, पर शक्तिशाली एकछत्र अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना से एक ओर जहाँ बाह्म आक्रमणों से सुरक्षा की व्यवस्थाा हुई। वहीं उससे आन्तरिक शक्ति व व्यवस्था की स्थिति भी अच्छी हुई। जिससे अपनी रक्षा की समस्या से स्वतंत्र होकर लोगों को समाज–सुधार व राष्ट्रीयता आदि की उदान्त भावनाओं की ओर आकृष्ट होने का अवसर प्राप्त हुआ।

(5) विदेशी आन्दोलनों का प्रभाव :– विदेशी से सम्पर्क स्थापित होने के कारण इटली, जर्मनी, रूमानिया, सर्बिया के राजनीतिक आन्दोलनों, फ्रांस में तृतीय गणतंत्र की स्थापना तथा इंगलैण्ड के सुधार आन्दोलनों की सफलता से भारतीयों को भी अपनी स्वतंत्रता के लिए आन्दोलन करने का प्रोत्साहन मिला। श्री मजूमदार ने लिखा है–''भारतीय सीमा से बाहर धटित इन घटनाओं ने स्वभावतः भारतीय राष्ट्रीयता की धारा को प्रभावित किया।''

(6) पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार :– ब्रिटिश शासन के साथ–साथ भारत में पाश्चात्य शिक्षा का भी आगमन हुआ। उसके विस्तार के साथ–साथ शिक्षा प्रचार–प्रसार पर 'रजनी पामदत्त' ने लिखा है–'' भारत में ब्रिटिश शासन द्वारा पाश्चात्य शिक्षा के प्रारम्भ किए जाने

का उद्देश्य यह था कि भारतीय सभ्यता व संस्कृति का पूरी तरह से लोप हो जाए और एक ऐसे वर्ग का निर्माण हो, जो रूचि, विचार, शब्द और बुद्धि से अंग्रेज हो।'' पाश्चात्य शिक्षा के प्रसार ने अपने इस उद्देश्य को काफी हद तक पूरा किया। अंग्रेजी में शिक्षित भारतीय सभयता व संस्कृति से विमुख होकर पश्चिमी सभ्यता व जीवन के रंग में रंग गए।

(7) भारतीय समाचार–पत्र एवं देशी साहित्य :– समाचार पत्र व साहित्य प्रत्येक देश के जन–जीवन को प्रभावित करते है तथा भारत के तत्कालीन समाचार–पत्र व देशी साहित्य ने भारतीयों में राष्ट्रीय भावना को जाग्रत करने में बड़ा महत्वपूर्ण योगदान दिया। उस समय कुछ समाचार–पत्र निकले, जिनके मालिक व सम्पादक भारतीय थे और जिन्होने सरकार की अनुचित नीतियों की आलोचना की तथा जातीय समानाधिकार का समर्थन किया तथा भारतीयों द्वारा देश के शासन के संचालन व नियंत्रण के अधिकार का प्रतिपादन किया। आरम्भ में जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जैसा कोई राष्ट्रीय मंच नही था। भारतीय समाचार–पत्रों ने राष्ट्रीय मंच का कार्य किया तथा जन नेताओं के विचारो व अनुचित सरकारी कार्यो की आलोचना को देश के कोने–कोने में फैलाकर तथा सरकार के अनुचित कार्यों के प्रति विरोध की भावना का प्रसार कर देश के वातावरण को राष्ट्रीय जागृति के अनुकूल बनाया। उस समय के उन समाचार–पत्रों में जिन्होंने राष्ट्रीयता का पक्ष–पोषण किया, बंगदूत, अमृत–बाजार पत्रिका, ट्रिब्यून और पायनियर विशेष रूप से उल्लेखनीय था।

भारतीय साहित्य विशेषकर बंगला साहित्य ने भी राष्ट्रीयता के उदय में बड़ा महत्वपूर्ण योग दिया। ''आधुनिक बंगाली राष्ट्रीयता की धर्म पुस्तक'' कही जाने वाली बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय की 'आनन्द मठ' नामक उस कृति का, जिसने हमें 'वन्दे मातरम्' का राष्ट्रगीत प्रदान किया। भारत के नवयुवकों के मस्तिष्कों पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा तथा उसने सम्पूर्ण भारत के क्रान्तिकारी राष्ट्रीयता की पाठ्यपुस्तक का कार्य किया।

(8) आर्थिक असन्तोष :– ब्रिटिश उपनिवेशवाद द्वारा किए गए भारतीय समाज के शोषण के कारण जो आर्थिक असन्तोष पैदा हुआ, उसने भी बहुत हद तक राष्ट्रीयता की भावना को पनपाया तथा इसी कारण 'गैरट' ने अपनी पुस्तक 'एन इण्डियन कमेण्टरी' में लिखा है– ''राष्ट्रीयता में शिक्षित वर्ग का अनुराग सदा कुछ हद तक धार्मिक तथा कुछ हद तक आर्थिक कारणों से हुआ है।''

(9) शिक्षित भारतीयों में असन्तोष :– कम्पनी के भारत से जाने के समय सन् 1858 में इंगलैण्ड के शासन की ओर से यह घोषणा की गई थी कि– ''योग्यतानुसार भारतीयों को सरकारी पद दिए जाएंगे'' पर बाद में अंग्रेजी सरकार की यह घोषणा केवल एक घोषणा ही होकर रह गई। व्यवहार में भारतीयों के लिए ऐसी स्थिति नहीं हो सकी कि वे उच्च पद प्राप्त कर सकें। भारतीय नागरिक सेवा की प्रतियोगी परीक्षा इंगलैण्ड में होती थी। सन् 1877 में परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक आयु 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दी। जिसमें एक ओर इंगलैण्ड के अधिक युवकों के लिए परीक्षा में बैठना सम्भव हो गया, तो दूसरी ओर भारतीय युवकों के लिए इतनी कम उम्र में इंगलैण्ड जाकर परीक्षा में बैठना और कठिन हो गया। ब्रिटिश शासन के इस प्रकार के कार्यों के विरूद्ध स्थापित इण्डियन एसोसिएशन (Indian Association) के माध्यम से सर सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने देशव्यापी आन्दोलन चलाया, जिससे भारतीयों के शिक्षित वर्ग में राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत हुई।

(10) जातीय भेदभाव एवं कटुता :– सन् 1857 के विद्रोह के बाद अंग्रेजों व भारतीयों के बीच जिस जातीय भेदभाव एवं कटुता का प्रादुर्भाव हुआ, उसने भी भारतीयों में

अंग्रेजी शासन के प्रति विरोध की भावना व राष्ट्रीयता को अत्यधिक प्रोत्साहित किया इस सम्बन्ध में श्री 'गुरूमुख सिंह' ने लिखा है– विद्रोह के बाद भारत में आने वाले अंग्रेजों के मस्तिष्क में भारतीयों के विषय में बड़ी विचित्र धारणाएं रहने लगी''।

(11) लॉर्ड लिटन की दमन नीति :– अपनी कृति 'ए नेशन इन दी मेकिंग' में सर सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने लिखा है– ''प्रतिकियावादी शासक बहुधा महान सार्वजनिक आन्दोलन के सृजनकर्ता होते हैं। निसंदेह वे इस अभियोग से इंकार करेंगें और न वे इस श्रेय को स्वीकार करेंगे, पर वे अवश्य ही ऐसे बीज बोते है, जो समय पूरा होने पर जनमत के उभार तथा जनहित की विजय को अवयश्म्भावी बना देते है।''

सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी का यह कथन भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के सम्बन्ध में पूरी तरह चरितार्थ होता है। 'लॉर्ड लिटन' का प्रतिक्रियावादी शासन काल बहुत हद तक भारत में राष्ट्रीय चेतना के उदय के लिए उत्तरदायी माना जाता है।

(12) इल्वर्ट विधेयक सम्बन्धी विवाद :– न्याय की तब तक की व्यवस्था के अनुसार भारतीय न्यायाधीश अंग्रेजो के विरूद्ध मुकदमों की सनवाई नहीं कर सकते थे। सन् 1883 में तत्कालीन कानूनी सलाहकार श्री 'कोटनी इल्बर्ट' ने एक विधेयक व्यवस्थापिका परिषद् में प्रस्तुत किया, जिसका उद्देश्य भारतीय न्यायाधीशों को अंग्रेजों के ही समान अंग्रेजों के विरूद्ध मुकदमों की सुनवाई का अधिकार प्रदान करना था। भारत मे रहने वाले अंग्रेजों की ओर से इसका संगठित विरोध करने के लिए उनके द्वारा एक 'रक्षा संगठन (Defence Association) की स्थापना की गई। अंग्रेजों के प्रबल विरोध के करण विरोध को इस संशोधन के साथ पारित किया गया कि भारतीय न्यायाधीश अंग्रेजों के विरूद्ध मुकदमों की सुनवाई केवल ऐसी जूरी की सहायता से ही कर सकेगें, जिसमें कम–से–कम आधे सदस्य अंग्रेज हों। 'इल्वर्ट' सम्बन्धी विवाद से भारत के लोगों ने यह सीखा कि संगठन में शक्ति होती है तथा अपनी किसी माँग को मनवाने के लिए उन्हें उसी प्रकार अंग्रेज लोग 'इल्वर्ट विधेयक' के विरूद्ध संगठित हुए थे।

उपर्युक्त कारणों से भारत के लोगों में इस भावना का विकास हुआ कि भारतीयों की सोचनीय दशा का कारण भारत में ब्रिटिश शासन का अस्तित्व है तथा इस भावना के परिणामस्वरूप ब्रिटिश शासन के प्रति विरोध व राष्ट्रवाद की उस भावना को प्रोत्साहन मिला, जिसके संगठित रूप की अभिव्यक्ति के रूप में (Indian National Congresss) कि स्थापना हुई।

इस तरह 1857 की क्रांति से उत्पन्न स्थिति का अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय जनमानस यह चाहने लगी कि उसे सुविधाओं के साथ–साथ ब्रिटिश हुकुमत के विरूद्ध एकजुट होने की आवश्यकता है, चाहे इस भावना को उदित करने में ऐसे कई कारणों को देखा जा सकता है किन्तु हथियारों से अंग्रेजों के विरूद्ध उठाया गया 1857 की क्रांति का कदम अवश्य रूप से जनजाग्ररूकता का आधार तैयार किया था।

संदर्भित सूची :–

(1) रॉबर्ट्स, पी0 ई0 – ब्रिटिश कालीन भारत का इतिहास।
(2) परमात्मा शरण – भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन
(3) नागोरी, एस. एल. (डॉ) – आधुनिक भारत।
– भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन।
– भारत के स्वतंत्रता सेनानी।
(4) बोस, एस0. के0. – आधुनिक भारत के निर्माता।
(5) ताराचन्द (डॉ) – भारतीय स्वंतत्रता आन्दोलन का इतिहास, खण्ड 1–4
(6) देसाई, ए0, आर0 – भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि।